श्री राम–स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारूणं।
नवकंज–लोचन, कंजमुख, कर–कंज, पद कंजारूणं ।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील–नीरज–सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव–दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ–नंदनं।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणं।
आजानु भुज सर–चाप–धर, संग्राम–जित–खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष–मुनि–मन–रंजनं।
मम हृदय–कंज निवास कुरू, कामादि खल–दल गंजनं।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरू सहज सुंदर साँवरो।
करूणा निधान सुजान शील सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि अशीष - सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।
सो.– जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्षित जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

।।सियावर रामचन्द्र की जय ।।

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्टदलन रघुनाथ कला की ।।टेक।।
जाके बल से गिरिवर काँपै । रोग–दोष जाके निकट न झाँपै ।।१।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ।।२।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ।।३।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ।।४।।
लंका जारि असुर संहारे । सियारामजीके काँज सँवारे ।।५।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि संजीवन प्रान उबारे ।।६।।
पैठी पताल तोरि जम–कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ।।७।।
बायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ।।८।।
सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ।।९।।
कंचन थार कपूर लौ छाई । आरती करत अंजनी माई ।।१०।।
जो हनुमानजी की आरती गावे । बसि बैकुंठ परम पद पावे ।।११।।
लंका विध्वंस किये रघुराई । तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ।।१२।।

श्री
SEVA
बीदासर : कोलकात्ता

SALASAR-RATANGARH Road, SOBHASAR-331506
Tehsil : SUJANGARH, Dist. : CHURU, (Rajasthan)

जय श्री राम ★ जय श्री राम ★ जय श्री राम

श्री हनुमानचालीसा

दोहा – श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोंहि, हरहु कलेस बिकार।

चौपाई

जय हनुमन ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ ब्रज औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेउ साजै।।
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरो तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारो जुग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।

साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बँदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा।।

दोहा पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।